Tc.No. : GUJHIN00722

पेज: 4, मुल्य 1 रु.

# क्रांति समय

संस्थापक / संपादक : सुरेश मौर्या

E-mail: krantisamay@gmail.com, www.krantisamay.com

वर्ष: 1 अंक: 11 , 02 अक्टुबर, सोमवार 2017, सूरत, हिन्दी दैनिक 9879141480

4 ओ ब्लॉक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष, सचीन रेल्वे स्टेशन के पास, सूरत-गुजरात

## राहुल दिवाली के बाद कांग्रेस प्रमुख की जिम्मेदारी संभाल सकते हैं: सचिन पायलट





**जबलपुर (एजेंसी)।**

नई दिल्ली - राजस्थान कांग्रेस के प्रमुख सचिन पायलट ने कहा है कि अब समय आ गया है कि कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी को पार्टी की कमान संभाल लेनी चाहिए और वह दिवाली के कुछ समय के बाद यह जिम्मेदारी संभाल सकते हैं. उन्होंने यह भी कहा कि नेताओं के अंतिम नाम को राजनीति में कोई अयोग्यता नहीं समझा जाना चाहिए.

**'पार्टी में आम भावना यही है'**

यह पूछे जाने पर कि कांग्रेस के संगठन चुनाव में क्या राहुल गांधी को पार्टी की कमान संभालनी चाहिए, सचिन ने कहा, ''पार्टी में आम भावना तो यही है..श्री गांधी को पार्टी की कमान संभालनी चाहिए. हालांकि उपाध्यक्ष के रूप में वह अभी भी पार्टी के अधिकतर कामों को अंजाम दे रहे हैं. अब समय आ गया है कि उन्हें यह जिम्मेदारी संभाल लेनी चाहिए. वैसे स्वयं उन्होंने भी कहा है कि वह इसके लिए तैयार हैं. '' उन्होंने कहा,''संगठनात्मक चुनाव कांग्रेस में चल रहे हैं. नये अध्यक्ष दिवाली के बाद जिम्मेदारी संभाल सकते हैं. इसकी योजना काफी समय से चल रही है.'' राहुल ने पिछले माह अमेरिका यात्रा के दौरान कहा था कि वह कांग्रेस नेतृत्व का उत्तरदायित्व संभालने के लिए तैयार हैं.

प्रियंका को क्या राजनीति में आना चाहिए, इस प्रश्न के उत्तर में सचिन ने कहा, ''यह उनका व्यक्तिगत निर्णय है. मेरा मानना है कि वह कांग्रेस परिवार से संबंधित हैं और जरूरत पड़ने पर अपना योगदान देती हैं. वह सक्रिय राजनीति में आयें या नहीं, यह उनका एवं उनके परिवार का निजी फैसला होगा.''

कांग्रेस में बुजुर्ग पीढ़ी को युवाओं को रास्ता देने के बारे में सवाल करने पर उन्होंने कहा, ''वैसे तो यह एक स्वाभाविक क्रम है. पर बात मौका देने की नहीं सबको साथ लेकर चलने की है. ऐसा नहीं है कि कोई ''कट आफ डेट'' होनी चाहिए.''

उन्होंने केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार में मंत्री के लिए कथित आयु मापदंड पर चुटकी लेते हुए कहा, ''राजनीति में मापदंड चयन के लिए नहीं बल्कि लोगों को हटाने के लिए बनाये जाते हैं. हमें पुरानी पीढ़ी के अनुभवों का पूरा लाभ उठाना चाहिए. हम (कांग्रेस) भाजपा की तरह मार्गदर्शक मंडल बनाने में विश्वास नहीं करते. भाजपा के मार्गदर्शक मंडल से बढ़कर कोई मजाक नहीं हो सकता. आज (लालकृष्ण) आडवाणीजी और (यशवंत) सिन्हाजी की क्या हालत बना रखी है, आप भाजपा वालों से पूछ सकते हैं. हमारे यहां ऐसा नहीं हो सकता.''

**'अंतिम नाम की वजह से आप बहुत दूरी तक नहीं जा पाएंगे'**

उन्होंने कहा, ''मेरा मानना है कि इसमें अच्छा मिश्रण होना चाहिए. साथ ही बदलाव भी होते रहने चाहिए. आजादी के बाद कांग्रेस ने भी समय समय पर अपनी सोच में बदलाव किया है.''वंशवादी राजनीति के बारे में उनके विचार पूछे जाने पर सचिन ने अपना उदाहरण देते हुए कहा, ''मेरा मानना है कि इसमें विचार करने वाली बात यह है कि आपका कामकाज, प्रदर्शन कैसा है. आपको टिकट तो मिल गया किन्तु अंतिम निर्णय तो लाखों लोग करते हैं. महज आपके अंतिम नाम की वजह से आप बहुत दूरी तक नहीं जा पायेंगे. आपको अपना दिलो-जान लगाना पड़ता है. बहुत सारे परिवार हैं जिनके सदस्यों ने राजनीति में आने का प्रयास किया पर वे सफल नहीं हुए.''

उन्होंने कहा,''आप काम करोगे, जनता के बीच रहोगे तो जीतोगे. किसी के बेटे-भतीजे होने से ही सब कुछ नहीं हो जाता. जनता के बीच अपनी पैठ बनानी होगी.'' सचिन ने भाजपा द्वारा कांग्रेस पर वंशवादी राजनीति का आरोप लगाने का जिक्र करते हुए कहा, ''आप राजस्थान की मुख्यमंत्री (वसुंधरा राजे) को ही देखिए. उनका पुत्र सांसद है. उनकी एक बहन मध्य प्रदेश सरकार में मंत्री है. उनकी मां भाजपा की संस्थापक सदस्यों में थीं.''

उन्होंने कहा, ''यह कहना कि वंशवादी राजनीति केवल एक पार्टी में है..सत्य के कोसों दूर है. हम इस वास्तविकता को स्वीकार करते हैं कि यदि किसी में क्षमता है, वह परिणाम दे सकता है तो उसे मौका मिलना चाहिए. भाजपा को दूसरों पर अंगुली उठाने से पहले अपनी तरफ भी देखना चाहिए.''उन्होंने कहा कि वह न तो वंशवादी राजनीति का प्रोत्साहन करते हैं न ही इसकी निंदा करते हैं. आप जनता पर किसी को थोप नहीं सकते.

## नारायण राणे ने बनाई नई पार्टी

**मुंबई।** महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री नारायण राणे ने आज महाराष्ट्र स्वाभिमान पक्ष नाम से नई पार्टी का गठन किया। हाल ही में उन्होंने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था। राणे ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा, मैंने पार्टी बनाई है। मैं कुछ लोगों के शामिल होने का इंतजार कर रहा हूं और फिर आगे के कदम के बारे में फैसला करूंगा।



कुछ दिनों पहले तक इस तरह की अटकलें थीं कि राणे भाजपा में शामिल हो सकते हैं। पिछले सप्ताह राणे ने भाजपा अध्यक्ष अमित शाह से मुलाकात की थी। कोंकण क्षेत्र में खासा असर रखने वाले राणे ने पिछले महीने कांग्रेस से इस्तीफा दिया था और आरोप लगाया था कि 12 साल पहले जब वह कांग्रेस में शामिल हुए थे तो उनको मुख्यमंत्री बनाने का वादा किया गया था लेकिन यह वादा पूरा नहीं किया गया। कांग्रेस से पहले वह शिवसेना में थे। उन्होंने महाराष्ट्र विधान परिषद की सदस्यता से भी इस्तीफा दे दिया था। मराठा समुदाय के प्रभावशाली नेता माने जाने वाले राणे शिवसेना में रहते हुए 1999 में मुख्यमंत्री बने थे।

## राष्ट्रपति कोविंद ने शिरडी हवाई अड्डे का उद्घाटन किया

**शिरडी (एजेंसी)।**

राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने आज महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में नवनिर्मित शिरडी हवाई अड्डे का उद्घाटन किया। हवाई अड्डा सूत्रों ने बताया कि राष्ट्रपति का विमान नई से दिल्ली उड़ान भरने के बाद शिरडी हवाई अड्डे पर सुबह 10:30 बजे उतरा। कोविंद ने इस हवाई अड्डे को राष्ट्र को समर्पित किया।

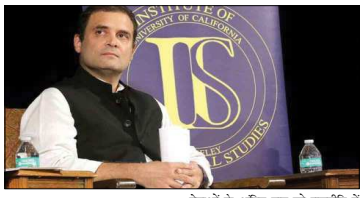

इस हवाईअड्डे से वाणिज्यिक उड़ानों की शुरुआत आज से ही होगी। सूत्रों ने बताया कि एलायंस एयर यहां से मुंबई के लिए उड़ान का परिचालन करेगी। हवाई अड्डे को पिछले महीने नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) से वाणिज्यिक परिचालन का लाइसेंस मिला था। यह हवाई अड्डा देश के आर्थिक केंद्र मुंबई से 238 किलोमीटर दूर स्थित है। शिरडी साई बाबा का प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहां देशभर से लोग दर्शन के लिए आते हैं। एक अनुमान के अनुसार प्रतिदिन 60,000 लोग शिरडी में दर्शन करने आते हैं। हवाई अड्डा प्राधिकरण का इरादा इनमें से 10 से 12 प्रतिशत यात्री हासिल करने का है। यह साल साई बाबा का 100वां पुण्य तिथि का वर्ष है। इस हवाई अड्डे का स्वामित्व और विकास महाराष्ट्र हवाई अड्डा विकास कंपनी (एमएडीसी) ने किया है। यह राज्य में हवाई अड्डों का विकास करने वाली विशेष इकाई है। इस हवाई अड्डे से परीक्षण उड़ानें हाल में आयोजित की गई हैं। एक बार इस हवाई अड्डे का परिचालन शुरू होने के बाद मुंबई से शिरडी के लिए यात्रा का समय घटकर 40 मिनट रह जाएगी। अभी सड़क मार्ग से इसमें पांच घंटे का समय लगता है।





## दुश्मनों के छक्के छुड़ाने की तैयारी शुरू, राफेल विमानों के लिए तैयार किए जा रहे वायुसेना अड्डे

**लुधियाना (एजेंसी)।**

अंबाला - भारतीय वायुसेना ने राफेल युद्धक विमानों की पहली स्क्वाड्रन की तैनाती के लिए अपने अग्रिम पंक्ति के बड़े अड्डों को बेहतर बनाने का काम शुरू कर दिया है. वायुसेना के एक अधिकारी ने बताया कि सरकार ने राफेल विमानों के लिए 78 साल पुराने अड्डे पर 14 शेल्टर, हैंगर और रखरखाव की सुविधाएं स्थापित करने के लिए पहले ही 220 करोड़ रूपये की स्वीकृति प्रदान की है. राफेल विमानों की आपूर्ति सितंबर, 2019 से आरंभ होगी.

अधिकारी ने नाम नहीं जाहिर करने की शर्त पर बताया, %हम राफेल विमानों के लिए अगले 40-50 वर्षों तक की बुनियादी ढांचे की जरूरत को ध्यान में रखते हुए ढांचा तैयार कर रहे हैं%. अंबाला स्थित यह वायुसेना अड्डा रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान पर स्थित अड्डों में से एक है. यह भारत-पाक सीमा पर करीब 220 किलोमीटर दूर है. फिलहाल इस अड्डे पर जगुआर विमानों की दो स्क्वाड्रन हैं और मिग-21 बिसन विमानों की एक स्क्वाड्रन है. वायुसेना के मार्शल अर्जन सिंह स्वतंत्र भारत में अंबाला अड्डे के पहले कमांडर थे. हाल ही में उनका निधन हुआ.

भारतीय वायुसेना के एक अधिकारी ने बताया कि पश्चिम बंगाल में हासिमारा अड्डे पर भी बुनियादी ढांचे को उन्नत बनाने का काम चल रहा है. यहां राफेल विमानों की दूसरी स्क्वाड्रन होगी. अधिकारी ने कहा, %हम अगले साल के आखिर तक राफेल विमानों के लिए सभी बुनियादी ढांचे तैयार कर रहे हैं%.

**राफेल विमान की ये है ताकत**

आसमान से दुश्मनों के छक्के छुड़ा देने वाला राफेल एक बहुउपयोगी लड़ाकू विमान है. जानकार बताते हैं कि राफेल ऊंचे इलाकों में लड़ने में माहिर है. राफेल एक मिनट में 60 हजार फुट की ऊंचाई तक जा सकता है. यह दो इंजन वाला लड़ाकू विमान है, जो भारतीय वायुसेना की पहली पसंद है. यह हर तरह के मिशन पर जा सकता है. राफेल हवा से हवा और हवा से जमीन में मार करने में सक्षम है. इसकी अधिकतम स्पीड 2,130 किमी/घंटा है. चीन के पास भी इसकी टक्कर का कोई विमान नहीं है. यह परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम है.

## 30 साल भारतीय सेना में दिए, अब लग रहा देश में अवैध रूप से रहने का आरोप

**नई दिल्ली।** भारतीय सेना में 30 साल सेवा देने के बाद रिटायर हुए मोहम्मद अजमल पर भारतीय न होने का संदेह जताया जा रहा है। उनसे इस बात का सुबूत मांगा जा रहा है कि वे भारतीय नागरिक हैं या नहीं। उनसे ही नहीं उनकी पत्नी से भी 2012 में भारतीय नागरिकता का साक्ष्य पेश करने के लिए कहा गया था।

मोहम्मद अजमल हक गुवाहाटी में रह रहे हैं। विदेशी मामलों की



ट्राइब्यूनल ने हक को नोटिस भेजा है। नोटिस में उन्हें 'संदिग्ध वोटर' श्रेणी में रखते हुए ट्राइब्यूनल के सामने पेश होने के लिए कहा गया है। नोटिस में हक से कहा गया है कि वे ट्राइब्यूनल के समक्ष पेश हों और दस्तावेज जमाकर साबित करें कि उनके पास भारतीय नागरिकता है। हक ने बताया है कि ट्राइब्यूनल की तरफ उन्हें नोटिस देर से मिला और इस वजह से पेशी की पहली तारीख 11 सितंबर को ट्राइब्यूनल के सामने हाजिर नहीं हो सके। उन्होंने बताया कि अब वह 13 अक्टूबर को पेश होंगे। हक ने नोटिस पर नाराजगी जताई है। उन्होंने कहा है कि छह महीने के सैन्य प्रशिक्षण के बाद वे सेना के तकनीकी विभाग से जुड़े। पंजाब के खेमकरन सेक्टर और कलियागांव में स्पष्ट पर, भारत-चीन सीमा पर त्वांग में, लखनऊ में, कोटा में सेवा दे चुके हैं। कुछ वक्त सिकंदराबाद स्थित रक्षा प्रबंधन कॉलेज में भी काम किए। हक कहते हैं कि अगर वे अवैध प्रवासी हैं तो फिर वे भारतीय सेना में कैसे अपनी सेवा देते रहे। दुखी मन से हक ने कहा कि, 30 साल देश का अब उन्हें ये इनाम दिया जा रहा है। उन्होंने बताय कि उनकी पत्नी को भी इसी तरह से प्रताड़ित किया गया था। हक की पत्नी मुमताज बेगम को इसी ट्राइब्यूनल ने 2012 में तलब कर नागरिकता साबित करने को कहा था।

## रजनीकांत ने पूछा 'राजनीति का सक्सेस मंत्र', कमल हासन बोले- हमारे साथ आ जाइए!

**नई दिल्ली (एजेंसी)।**

चेन्नई में शिवाजी गणेशन मेमोरियल के उद्घाटन में एक्टर कमल हासन और रजनीकांत दोनों ही पहुंचे. यहां कमल हासन और रजनीकांत काफी देर तक एक दूसरे से बात करते हुए नजर आए. इतना ही नहीं कार्यक्रम में रजनीकांत ने बताया कि, जब उन्होंने कमल हासन से पूछा कि राजनीति में कैसे सफल हों तो उन्होंने कहा- 'मेरे साथ आइए तब मैं आपको इसका जवाब दूंगा'. बता दें इस कार्यक्रम में तमिलनाडु के डिप्टी सीएम पनीरसेलवम भी शामिल हुए.

बता दें कमल हासन पिछले कुछ वक्त से अपनी पार्टी बनाने की योजना के चलते सुर्खियों का हिस्सा बने हुए हैं. उन्होंने यह पहले ही कहा है कि अगर सुपरस्टार रजनीकांत राजनीति में आते हैं तो वह उनसे हाथ मिलाना पसंद करेंगे. इसके अलावा कुछ वक्त पहले ही कमल हासन ने दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल से मुलाकात की थी और वह उनसे नजदीकियां बढ़ाते हुए दिखे थे. वहीं रजनीकांत पीएम मोदी के स्वच्छता अभियान का समर्थन किया था. ऐसे में अटकलों का बाजार गर्म होता जा रहा है कि ये दोनो स्टार राजनीति में कौन सी दिशा पकड़ेंगे.

हालांकि, अभी तक दोनों की तरफ से कुछ भी कनफर्म नहीं किया गया है. कमल हासन पहले ही कह चुके हैं कि उन्हें पार्टी लॉन्च करने की कोई जल्दी नहीं है.



## सेना में 30 साल नौकरी कर चुके हैं मोहम्मद अजमल, अब साबित करनी होगी नागरिकता

**मुंबई (एजेंसी)।**

भारतीय सेना में रहते हुए असम में 30 साल ड्यूटी निभाने के बाद रिटायर्ड जेसीओ मोहम्मद अजमल हक पर अवैध तरीके से भारत में रहने के आरोप लगे हैं. आरोप है कि मोहम्मद अजमल हक भारत नागरिक नहीं हैं. मुकदमा के मुताबि मोहम्मद अजमल हक बांग्लादेशी हैं और वे भारत में अवैध तरीके से रह रहे हैं. इस मामले की सुनवाई विदेशी मामलों की ट्राइब्यूनल में 13 अक्टूबर को होगी. मोहम्मद अजमल के परिवार के सामने यह हालात दूसरी बार आए हैं. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक तीन साल पहले मोहम्मद अजमल की पत्नी पर भारत में अवैध तरीके से रहने के आरोप लगे थे, हालांकि जांच के बाद साबित हो गया कि वह भारतीय ही हैं.

मीडिया से बातचीत में मोहम्मद अजमल हक ने कहा, 'मैंने 30 साल तक सेना में नौकरी की है. मुझे देश सेवा करने का ईनाम के रूप में गैर हिन्दुस्तानी ठहराया जा रह है. मैं इस घटना से बेहद दुखी हूं. मेरी पत्नी को भी इसी तरीके से प्रताड़ित किया जा चुका है.'

मोहम्मद अजमल हक ने कहा कि वे फिलहाल गुवाहाटी में परिवार के साथ रहते हैं. 30 साल सेना में नौकरी करने के बाद वे रिटायर हो चुके हैं. पिछले महीने अचानक एक नोटिस मिला, जिसमें मुझसे कहा गया कि आप हिन्दुस्तानी नहीं हैं. अगर आप हिन्दुस्तानी हैं तो इसे साबित करें. मुझसे भारती की नागरिकता का सबूत मांगा गया है. मीडिया के कैमरों पर उन्होंने कहा कि वे जन्मजात भारतीय हैं. हक ने 1986 में टेक्निशियन के तौर पर सेना में आए थे. हक का बेट अभी प्रतिष्ठित इंडियन मिलिट्री कॉलेज देहरादून में पढ़ता है, जबकि बेटी गुवाहाटी के नारेंगी स्थित आर्मी पब्लिक स्कूल की छात्रा है.

**इस वजह से मोहम्मद अजमल हक पर किया गया संदेह**

असम सरकार ने 100 फॉरनर्स ट्राइब्यूनल्स का गठन किया है. यह असम में अवैध तरीके से रह रहे बांग्लादेशियों की पहचान करते हैं. मोहम्मद अजमल हक को मिले नोटिस में लिखा गया है कि जिला पुलिस ने उनके खिलाफ केस दर्ज कर लिया है, क्योंकि वह 25 मार्च, 1971 के बाद भारत में बिना किसी दस्तावेज के घुस आए हैं. बता दें कि 25, 1971 को ही पाकिस्तानी सेना ने तब पूर्वी पाकिस्तान कहे जाने वाले बांग्लादेश के लोगों के खिलाफ ऑपरेशन सर्चलाइट शुरू किया था.



## सार समाचार

### अमित शाह पिनाराई के गांव में करेंगे पदयात्रा

**कन्नूर।** भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अध्यक्ष अमित शाह केरल में कन्नूर जिले के दो दिवसीय दौरे के दौरान पदयात्रा में भाग लेंगे जो मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव के पैतृक गांवों से होकर गुजरेगी। शाह मंगलोर से सडक़ मार्ग के जरिए तीन अक्टूबर को कन्नूर पहुंचेंगे और पदयात्रा के पहले दिन पय्यान्नूर से पीलाथारा के बीच 9.8 किलोमीटर की दूरी तय करेंगे। वह उसी दिन सडक़ मार्ग से मंगलोर लौट जाएंगे। भाजपा अध्यक्ष पांच अक्टूबर को मंगलोर से कन्नूर आएंगे और तीसरे दिन फिर पदयात्रा में भाग लेंगे। उस दिन शाह मम्बारम से थलास्सेरी तक वाया पिनाराई 12 किलोमीटर की दूरी तय करेंगे। गौरतलब है कि पिनाराई मुख्यमंत्री का पैतृक गांव है। शाह थलास्सेरी में एक जनसभा को भी संबोधित करेंगे। भाजपा के वरिष्ठ नेता पी के कृष्णादास ने आज यहां संवाददाताओं से कहा कि प्रदेश भाजपा अध्यक्ष कुमानम राजशेखरण पदयात्रा का नेतृत्व करेंगे। शाह पदयात्रा में भाग लेने के लिए सुबह पहुंचने के बाद मुख्य आयोजन स्थल पय्यान्नूर के वडिक्काल रामकृष्णन नगर में एक फोटो प्रदर्शनी को देखने जाएंगे और कन्नूर जिले में जिहादियों तथा कथित माकपा समर्थकों के हमले में मारे गए भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बलिदानियों को श्रद्धांजलि देंगे। बाद में शाह एक जनसभा संबोधित करेंगे।

### एनसीपी ने मुजीब रहमान को पार्टी से निकाला

कोझिकोड। केरल में सत्तारूढ़ वाम लोकतांत्रिक मोर्चा की सहयोगी दल राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ने भूमि अतिक्रमण को लेकर विवाद में आए राज्य के परिवहन मंत्री थॉमस चांडी के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग करने पर पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य मुजीब रहमान को दल से निष्कासित कर दिया है। समाचार चैनल पर इस मुद्दे को लेकर पैनल चर्चा के दौरान चांडी के खिलाफ कड़ा रुख अपनाने पर रहमान की पार्टी से प्राथमिक सदस्यता रद्द कर दी गई। एनसीपी राज्य इकाई के अध्यक्ष टी पी पीताम्बरन मास्टर ने कहा कि मंत्री की खिलाफत करने वाली पार्टी जिला समितियों के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। रहमान को चांडी के खिलाफ पार्टी और सरकारी स्तर पर जांच की मांग करने के लिए पहले ही राष्ट्रवादी युवा कांग्रेस के अध्यक्ष पद से हटा दिया गया था। कांग्रेस नीत विपक्षी दलों ने भी चांडी को मत्री पद से हटाने की मांग की है। अलापुजा में उनके स्वामित्व वाले लेक पैलेस रिसोर्ट के लिए कथित अतिक्रमण करने का मामला दर्ज है।

### सीपीएम यूथ विंग ने ट्रांसजेंडरों के लिए दरवाजे खोल, 9 मेंबर्स को संगठन में शामिल किया

तिरुवनंपुरम। माकपा की युवा इकाई डेमोक्रेटिक यूथ फेडरेशन ऑफ इंडिया (डीवाईएफआई) ने ट्रांसजेंडर समुदाय के नौ सदस्यों को संगठन में शामिल किया है. यह हाशिए पर पड़े वर्ग को मुख्यधारा की राजनीति में लाने का प्रयास है. डीवाईएफआई के सूत्रों ने बताया कि डीवाईएफआई की यहां नव गठित पीएमजी इकाई समिति में 11 सदस्य हैं जिसमें से नौ ट्रांसजेंडर हैं. यह संगठन की देश की पहली इकाई है जिसने ट्रांसजेंडरों के लिए दरवाजे खोले हैं.

**सदस्यता फॉर्म में तीसरे लिंग का कॉलम शामिल किया**

सूत्रों ने बताया कि पार्टी ने सदस्यता फॉर्म पर तीसरे लिंग का कॉलम भी शामिल किया है. नए सदस्यों के स्वागत के लिए कल आयोजित एक कार्यक्रम में ट्रांसजेंडर न्याय बोर्ड के सदस्य और कलाकार सूर्य अभिलाष को इकाई का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया. नगर निगम के पार्षद आईपी बिनू ने कहा कि कोच्चि में हाल में डीवाईएफआई के राष्ट्रीय सम्मेलन में ट्रांसजेंडरों को शामिल करने का फैसला ऐतिहासिक है. उन्होंने कहा कि ट्रांसजेंडर सामाजिक कलंक से लेकर स्वास्थ्य मुद्दों सहित बड़ी संख्या में परेशानियों का सामना करते हैं. हमारा लक्ष्य उनके सामाजिक निष्कासन को खत्म करना और उन्हें आगे लाना है.

### नहीं खुला थर्ड एसी कोच का गेट, स्टेशन से यात्रियों को लिए बिना ही रवाना हुई ट्रेन

जयपुर - जयपुर जंक्शन पर शनिवार को जयपुर से मुंबई जा रही गणगौर सुपरफास्ट एक्सप्रेस के थर्ड एसी के तीन कोच रवानगी तक नहीं खुलने से अफरातफरी मच गई. यात्रियों को लिए बिना ही ट्रेन रवाना होने लगी तो भगदड़ सी मच गई. इस दौरान कई यात्री घायल हो गए. इस सिलसिले में एक अधिकारी को निलंबित कर दिया गया है और मामले की जांच की जा रही है. मीडिया में आई खबरों के मुताबिक, करीब 100 से ज्यादा यात्री टिकट कन्फर्म होने के बावजूद यात्रा से वंचित रहे. गणगौर एक्सप्रेस के जयपुर से प्रस्थान का निर्धारित समय दोपहर 2 बजे था. ट्रेन अपने निर्धारित समय पर प्लेटफार्म पर पहुंच गई, लेकिन 22 मिनट तक एसी के कोच के गेट नहीं खुले. चूंकि ट्रेन की थर्ड एसी के तीनों कोच आपस में लिंक थे, ऐसे में यात्रियों को आसपास के एसी कोच में भी एंट्री नहीं मिली. ट्रेन के रवाना होने पर भगदड़ जैसी स्थिति बन गई. कुछ यात्रा जनरल तो कुछ अन्य कोच में चढ़ गए. कई यात्री बाहर ही खड़े रह गए. कुछ यात्रियों ने चैन पुलिंग की. ट्रेन रुकने पर बाहर खड़े कुछ यात्री दूसरे कोच में चढ़ सके. हालांकि फिर ट्रेन रवाना होने के बाद नहीं रुकी. उत्तर पश्चिम रेलवे के प्रवक्ता तरुण जैन ने बताया कि ट्रेन तय समय से देरी से प्लेटफॉर्म पर पहुंची थी. थर्ड एसी के कोच के एक तरफ का दरवाजा खुला ही नहीं था. इसी बीच ट्रेन वहां से रवाना हो गई जिसके कारण कई यात्री उसमें चढ़ नहीं सके.

## संपादकीय

# सुधारों की भी सुध लें

पुलिस आधुनिकीकरण की सही पहल

श्वस्रद्ब्ल्ल-1केंद्र सरकार द्वारा राज्यों में पुलिस आधुनिकीकरण के लिए 25 हजार करोड़ रुपये का आवंटन देर से ही सही, सही दिशा में सही कदम माना जायेगा। यह राशि तीन वर्षों में खर्च की जायेगी। इसका लगभग 75 प्रतिशत हिस्सा केंद्र सरकार देगी। खुद इसी राजग सरकार ने 14 वें वित्त आयोग की रिपोर्ट के बाद वर्ष 2015 में पुलिस आधुनिकीकरण के लिए राज्यों को दी जाने वाली केंद्रीय सहायता बंद कर दी थी। माना गया था कि राज्य सरकारें खुद पुलिस आधुनिकीकरण का खर्च वहन कर लेंगी, लेकिन वैसा कुछ हुआ नहीं। नतीजतन संसाधनों और कामकाज की दृष्टि से पहले से ही बदहाल पुलिस की हालत और भी बदतर हो गयी। न बदलते वक्त की जरूरतों के मुताबिक आधुनिक हथियार खरीदे गये, न ही जरूरी भवन निर्माण हो पाया। फोरेंसिक लैब जैसी जरूरी चीजें भी प्राथमिकता सूची में पिछड़ती गयीं, जबकि नक्सलवाद सरीखी आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों और सीमा पार प्रायोजित आतंकवाद के खतरे के मद्देनजर पुलिस का सर्वांगीण आधुनिकीकरण सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। देर से ही सही, अब केंद्र सरकार इस प्राथमिकता का अहसास हुआ है। पुलिस आधुनिकीकरण के लिए आवंटित राशि का एक बड़ा हिस्सा 10 हजार 132 करोड़ रुपये जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर तथा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों की पुलिस पर खर्च किया जायेगा।

स्वाभाविक ही, आधुनिकीकरण के लिए आवंटित इस विशाल राशि को पुलिस को हर दृष्टि से बेहतर बनाने पर खर्च किया जाना अपेक्षित है। आधुनिक संसाधनों की आवश्यकता और महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन उतना ही जरूरी पुलिस को बेहतर पेशेवर बनाना भी है। मुंबई पर आतंकी हमला हो या देश के विभिन्न हिस्सों में होने वाले नक्सली हमले, कई बार हमारी पुलिस में पेशेवर सोच और कार्यशैली की कमी उजागर हुई है। कहना नहीं होगा कि बहादुरी के बावजूद अकसर यह कमी भारी पड़ जाती है। इसलिए जरूरी है कि बदलते वक्त की चुनौतियों से निपटने के लिए पुलिस के पेशेवर प्रशिक्षण तथा फिटनेस पर भी विशेष ध्यान दिया जाये। पुलिस पेशेवर तरीके से अपना काम कर पाये, इसके लिए यह भी जरूरी है कि उसे राजनीतिक तंत्र के चंगुल से मुक्त कराया जाये। दशकों से पुलिस सुधार की जरूरतों पर जोर दिया जाता रहा है। सर्वोच्च अदालत भी समयबद्ध ढंग से पुलिस सुधारों के लिए कह चुकी है, लेकिन राज्यों की सत्ता पर काबिज राजनीतिक नेतृत्व कागजी खानापूर्ति से आगे कुछ करना ही नहीं चाहता। कारण यही है कि सही-गलत राजनीतिक हितों की पूर्ति में पुलिस का खुलेआम दुरुपयोग किया जाता है और किसी भी दल की राज्य सरकार इस काम में दूसरों से पीछे नहीं रहना चाहती। वक्त का तकाजा है कि केंद्र सरकार आधुनिकीकरण की इस मुहिम को सिरे चढ़ाते हुए पुलिस सुधारों को भी अनिवार्य बनाये।

# ड्राइविंग सीट पर महिलाएं

सऊदी अरब में बदलाव की नयी बयार

रिवायतों के नाम पर रूढ़ियों का दामन थामे बैठे सऊदी अरब की महिलाएं अब बेधड़क होकर बेरोकटोक देश की सड़कों पर कार चला सकेंगी। सऊदी अरब के किंग सलमान ने जैसे ही मंगलवार रात को इस आशय के आदेश पर दस्तखत किए, देशभर की महिलाएं कारें लेकर सड़कों पर निकल पड़ीं। खुली फिज़ा में स्वच्छंद विचरने के इस अधिकार की प्राप्ति के लिए हालांकि उन्हें बरसों संघर्ष करना पड़ा, खुशियों की सौगात लिए आखिर यह घड़ी आ ही गई। सऊदी अरब में ऐसा पहली बार होगा कि महिलाओं को भी पुरुषों की तरह ड्राइविंग लाइसेंस जारी होंगे। हालांकि, ये आदेश जून 2018 से लागू होंगे लेकिन एक समान अधिकारों की दिशा में लिए गए इस फैसले का स्वागत दुनियाभर में हो रहा है। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि विश्वभर में सऊदी अरब ही एकमात्र ऐसा देश है, जहां महिलाओं को वाहन चलाने की मनाही थी क्योंकि वहां के मौलवी मानते हैं कि महिलाओं का गाड़ी चलाना एक तरह से सामाजिक मान्यताओं का उल्लंघन है। चूंकि इन मौलवियों का वहां की न्यायपालिका और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में काफी दखल है, इसीलिए मुल्लाओं के रूढ़िवादी विचारों के खिलाफ महिलाओं को लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी। मुल्लाओं के इन फरमानों को धता बताकर 1990 में 47 महिलाओं ने जब वाहन चलाये तो कानून तोड़ने के आरोप में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

तब से वहां के विभिन्न महिला संगठनों ने ऐसे कानूनों के खिलाफ, जो महिलाओं को दोयम दर्जे का नागरिक उल्लेखित करते थे, अभियान छेड़ रखा था। सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों से छेड़ी गई इस मुहिम से वहां की सरकार की लगातार किरकिरी हो रही थी क्योंकि यह लैंगिक समानता के अधिकारों का सीधा उल्लंघन है। मनल-अल-शरीफ ऐसा ही चेहरा है, जो अकेले ही ड्राइविंग पर निकल गईं। यह 2011 की बात है जब उन्होंने खुद कार ड्राइव करते हुए वीडियो बनाया और उसे यू-ट्यूब पर डाल दिया। सिर्फ ड्राइविंग ही क्यों, कई अन्य क्षेत्रों में भी वहां की महिलाओं के लिए बंदिशें ही बंदिशें हैं। उनकी जरूरतें, उनके शौक और सपने पुरुषों की हामी के मोहताज हैं। उन्हें हक नहीं कि मर्दों की इजाजत के बगैर कहीं बाहर घूमने जा सकें या इल्म का अलिफ बे ही पढ़ सकें। बीमारी की हालत में बिना पूछे दवा-दारू की भी वे हकदार नहीं। इजाजत की तलवार हमेशा ही सिर पर लटकती रहती है।

## कटाक्ष/ कबीरदास

# धर्म-कर्म में न हो दिखावा

किसी नगर में रहने वाले एक संत के शुद्ध भक्तिमय जीवन की बड़ी ख्याति थी। वे प्रतिदिन जप-ध्यान वगैरह करते और मंदिर में प्रभु के दर्शन करने जाते। एक रोज रात में सोते समय उन्हें स्वप्न आया कि उनकी मृत्यु हो चुकी है और वे किसी और लोक में देवदूत के सामने खड़े हैं।

देवदूत सब मृत लोगों से उनके किए शुभ-अशुभ कार्यों का ब्योरा मांग रहा है। काफी देर बाद जब संत की बारी आई तो देवदूत ने उनसे पूछा - 'आप बताएं आपने अपने जीवन में क्या अच्छे काम किए हैं? अपने ऐसे कार्य बताएं, जिनका आपको पुण्य मिला हो?' देवदूत की बात सुनकर संत सोचने लगे कि मेरा तो सारा जीवन ही अच्छे कामों में बीता है, मैं कौन-सा काम बताऊं?

कुछ सोचने के बाद वे बोले - 'मैं पांच बार सभी तीर्थों के दर्शन कर चुका हूं।' देवदूत बोला - 'आपने तीर्थयात्राएं कीं, लेकिन आप अपने इस कार्य का जिक्र हर व्यक्ति से करते रहे। इसके कारण आपके सारे पुण्य नष्ट हो गए। इसके सिवा कोई और पुण्य का काम किया हो तो बताएं?' देवदूत की बात सुन संत को ग्लानि होने लगी। कुछ हिम्मत कर उन्होंने कहा - 'मैं प्रतिदिन भगवान का ध्यान और उनके नाम का स्मरण करता था।' इस पर देवदूत ने कहा - 'जब आप ध्यान करते और कोई दूसरा व्यक्ति वहां आ जाता तो आप कुछ अधिक समय तक जप-ध्यान में बैठे रहते। यह दिखावे का जप-ध्यान होता।'

यह सुनने के बाद तो संत का हृदय कांपने लगा। उन्हें लगा कि उनकी अब तक की सारी तपस्या बेकार चली गई। देवदूत ने आगे कहा - 'आप कोई और पुण्य का काम बताएं?' संत को अपना ऐसा कोई काम याद नहीं आ रहा था। उनकी आंखों में पश्चाताप के आंसू आ गए। तभी उनकी नींद टूट गई। स्वप्न की इस घटना से उन्हें अपने मन में छिपी कमजोरियों को परखने का मौका मिला।

उन्होंने उसी दिन से सबसे मिलना-जुलना और प्रवचन इत्यादि छोड़ दिए और एकनिष्ठ भाव से प्रभु की साधना में तल्लीन हो गए।

कथा का सार यह है कि धर्म और अध्यात्म के स्तर पर किए गए कार्य भी कई बार प्रदर्शन, नाम और यश आदि सांसारिक कामनाओं में उलझे होते हैं। यदि इनके प्रति सचेत न रहा जाए, तो ये हमारी प्रगति में बाधक हो सकते हैं।

# कुछ तो गड़बड़ है!

> “जेटली और यशवंत सार्वजनिक रूप से सीधी लड़ाई में शामिल हो गए हैं, तो मोदी सरकार और बीजेपी क्या कर रही है? दरअसल, ये दोनों पार्टी बन चुके हैं। जाहिर है, ऐसे में सिन्हा विपक्ष की पोशाक में दिखने लगे हैं। लेकिन वरिष्ठ पार्टी नेता और पूर्व मंत्री को अकेला समझना भूल होगी क्योंकि अकेला वह होता है, जो मुद्दाविहीन हो। जेटली और यशवंत सिन्हा में मुद्दाविहीन कौन है, देश को बताने की जरूरत नहीं रह गई है”

उपेन्द्र राय

जपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार में पहली बार किसी मुद्दे पर घमासान मचा दिखाई दे रहा है। घमासान अर्थव्यवस्था को लेकर है। और उससे भी ज्यादा गंभीर बात यह है कि इसकी ललकार पार्टी के भीतर से उठी है यानी इसे विरोधियों की रूटीन आलोचना या हताशा कह कर खारिज नहीं किया जा सकता। लेकिन हैरानी की बात है कि अर्थव्यवस्था की चेतावनी जैसे मुद्दे पर सरकार के गंभीर जवाब के बजाय उसे व्यक्तिगत आक्षेपों और आरोपों-प्रत्यारोपों में सानने की कोशिशें की जा रही हैं। सवाल एक सौ चौंतीस करोड़ लोगों से जुड़ा है, और जवाब केवल एक व्यक्ति को दिया जा रहा है। एक तरफ देश है, दूसरी तरफ व्यक्तिगत अहम। एक तरफ मुद्दा है, तो दूसरी तरफ मुद्दे से पलायन। दिलचस्प बात यह है कि दोनों ही तरफ ऐसे लोग हैं, जो या तो वित्त मंत्री के रूप में देश चला चुके हैं, या देश चला रहे हैं। सवाल है कि क्या पूर्व वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा को देश की अर्थव्यवस्था पर सवाल नहीं उठाना चाहिए था? और जवाब केवल यह है कि लोकतंत्र में यह सवाल ही बेमानी है। तो फिर, पूर्व वित्त मंत्री की आशंकाओं-आंकड़ों और दलीलों के जवाब में सरकार की उन आर्थिक नीतियों का हवाला दिया जाना चाहिए था, जो देश को विकास के रास्ते पर ले जा रही हैं, या फिर अर्थव्यवस्था की बात ताक पर रख कर व्यक्तिगत आक्षेपों की पोटली खोल देनी चाहिए थी। 80 साल की उम्र में नौकरी मांगने का आक्षेप कुछ इसी तरह का है। मोदी राज के तीन से ज्यादा वर्षों में अर्थव्यवस्था सुधार के ढेरों दावे किए गए। इन्हें बाहर से चुनौती मिली, लेकिन नकार दी गई। लेकिन जब सरकार को भीतर से ही चुनौती मिली तो मुद्दे ने गंभीर रु ख ले लिया। पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने देश की मौजूदा अर्थव्यवस्था को लेकर जो चिंता जताई, उससे सरकार कठघरे में खड़ी नजर आने लगी। जैसी की अपेक्षा थी, सीधे-सीधे निशाने पर आए वित्त मंत्री जेटली अगले ही दिन जवाब लेकर भी आ गए। लेकिन व्यक्तिगत आक्षेप ने अर्थव्यवस्था में सुधार के उनके दावों को हल्का कर दिया। वास्तव में, आंकड़ों की दुनिया में मोदी सरकार पर जो गाज पहली बार गिरी थी, यशवंत सिन्हा की जबान से वही बयां हो रही थी। पिछले वित्त वर्ष की आखिरी तिमाही में जीडीपी की वृद्धि दर 5.7 प्रतिशत पर आ गई थी। इसका असर वार्षिक अनुमान पर भी पड़ा जो 7.1 प्रतिशत पर आ गया। राजनीतिक रूप से यह इसलिए महत्त्वपूर्ण अवधि थी, क्योंकि यही वह समय था, जब नोटबंदी लागू की गई थी। लेकिन मोदी सरकार और बीजेपी ने इसका प्रचार सकारात्मक रूप में किया। संयोग से नोटबंदी के बाद हुए चुनाव ने भी सरकार के दावों पर मुहर लगा दी। वैसे, अर्थिक सर्वेक्षण करने वाली संस्थाओं की बात करें, तो जीडीपी का गिरना अप्रत्याशित नहीं था। आईएमएफ ने पहले ही विकास दर का अनुमान 8 प्रतिशत से घटाकर 7.2 प्रतिशत कर दिया था। आर्थिक विशेषज्ञ भी मान कर चल रहे थे कि नोटबंदी के बाद अर्थव्यवस्था की चाल सुस्त रहेगी। लेकिन यह भी बता रहे थे कि आगे सब कुछ ठीक रहने वाला है। सब कुछ समझते हुए भी भाजपा और उसकी सरकार सच स्वीकार करने से बचते रहे। पार्टी अध्यक्ष अमित शाह ने तो आखिरी तिमाही के नतीजे को नोटबंदी के बजाय तकनीकी कारणों वाला बता डाला। कुछ इस अंदाज में मानो वह बड़े



अर्थशास्त्री हों। लिहाजा, जब सिन्हा ने सरकार को कठघरे में खड़ा किया, तो शाह पर भी हमला करने से नहीं चूके। भाजपा, उसकी सरकार और वित्त मंत्री अपनी पार्टी के नेता के कठघरे में क्यों घिरे नजर आ रहे हैं? इसका केवल एक ही कारण है। वे भ्रम में जीना चाहते हैं। सरकार और उसके वित्त मंत्री नोटबंदी के बारे में कुछ भी नकारात्मक सुनने को तैयार नहीं हैं, जबकि बेहतर होता कि वे इसे तात्कालिक रूप से नकारात्मक ही मान लें, तो आने वाले दिनों में और ज्यादा बेहतर बदलाव की कोशिश और उम्मीद की जा सकती है। लेकिन अगर सरकार नोटबंदी के नकारात्मक असर को नकारेगी और जीडीपी गिरेगी, बेरोजगारी बढ़ेगी, उत्पादन के क्षेत्र के इंडीकेटर अर्थव्यवस्था की सुस्ती बताएंगे तो आर्थिक नीति को कसौटी पर कसा ही जाएगा। फिर इसकी आलोचना भी सुननी ही पड़ेगी। माना जा सकता है कि बीजेपी अध्यक्ष शाह को अर्थव्यवस्था की अधिक जानकारी नहीं है। मगर वित्त मंत्री से तो ऐसी उम्मीद नहीं थी। वह जब अपने पूर्ववर्ती का जवाब देने आए तो लगा कि अपने दमदार तकरे से देश को संतुष्ट कर लेंगे। लेकिन पार्टी के वरिष्ठ नेता और अर्थव्यवस्था की जानकारी रखने वाले यशवंत सिन्हा पर व्यक्तिगत आक्षेप करने के सिवा कुछ खास नहीं बता सके। 80 साल का नौकरी खोजने वाला जैसे आक्षेप लगा कर उन्होंने इतिश्री कर ली। जेटली से ज्यादा तार्किक विरोध तो यशवंत को अपने बेटे जयंत का ही झेलना पड़ा। वह भी वित्त राज्यमंत्री रह चुके हैं। जयंत ने कहा कि सीमित जानकारी के आधार पर बड़े निष्कर्ष नहीं निकाले जाने चाहिए। वास्तव में यही उचित जवाब है। लेकिन इन आंकड़ों और तयों को ध्यान में रखा जाए तो यशवंत सिन्हा की आलोचना पर ध्यान देना जरूरी है। सिर्फ सिन्हा ही नहीं, एक अन्य पूर्व वित्त मंत्री पी चिदम्बरम के आरोपों पर गौर करना भी सरकार के लिए जरूरी है। मगर इसके उलट प्रचार का जोर इस बात पर रहा कि मोदी सरकार में ज्यादा नौकरियां सृजित हो रही हैं, लेकिन वे दिख नहीं रही हैं। ऐसा क्यों हो रहा है? इसका जवाब तैयार है कि मोदी सरकार ''जॉब सीकर नहीं, जॉब क्रिएटर यूथ' पैदा कर रही है। कहने का मतलब यह है कि बीजेपी और उसकी सरकार कह रही है कि जो आंकड़े हैं, उन पर भरोसा मत कीजिए और जो आंकड़े नहीं हैं, उन पर भरोसा कीजिए। इस पहेली पर भी लोग बिना सोचे-समझे एतबार करने को तैयार हैं, लेकिन अपनी बात पर सरकार टिकी तो रहे। दुनिया भले ही पहेलियों पर भरोसा कर लेगी, लेकिन यशवंत सिन्हा जैसे लोग इस पर भरोसा नहीं कर सकते। वजह यह है कि वह अर्थशास्त्री भी हैं, और राजनीतिज्ञ भी। दोनों का स्वभाव बंधे-बंधाए तकरे को तोड़ने का और आगे बढ़ने का होता है। अब एक और बड़ा सवाल कि जब जेटली और यशवंत सार्वजनिक रूप से सीधी लड़ाई में शामिल हो गए हैं, तो मोदी सरकार और बीजेपी क्या कर रही है? दरअसल, ये दोनों पार्टी बन चुके हैं। जाहिर है, ऐसे में सिन्हा विपक्ष की पोशाक में दिखने लगे हैं। लेकिन वरिष्ठ पार्टी नेता और पूर्व मंत्री को अकेला समझना भूल होगी क्योंकि अकेला वह होता है, जो मुद्दाविहीन हो। जेटली और यशवंत सिन्हा में मुद्दाविहीन कौन है, देश को बताने की जरूरत नहीं रह गई है।बेहतर इकनोमी का जितना डंका पीट लिया जाए,संदेह बने रहेंगे। निश्चित रूप से मोदी सरकार ने अर्थव्यवस्था से जुड़े ढेरों फैसले लिए हैं। लेकिन जो नतीजे सामने आए हैं, वे डराने वाले हैं। सरकार को अपनी नीतियों पर भरोसा है, तो देश को भी भरोसा दिलाना होगा कि आने वाले दिनों में उसके कदमों से अच्छे नतीजे मिलेंगे। लेकिन इसके लिए सवालों को सुनना पड़ेगा। सवालों से बचना कोई उपाय नहीं है। तो यशवंत सिन्हा के सवाल का सम्मान कीजिए, तिरस्कार नहीं।

## प्रसंगवश

# गांधी का महात्मा होना

गिरीश्वर मिश्र

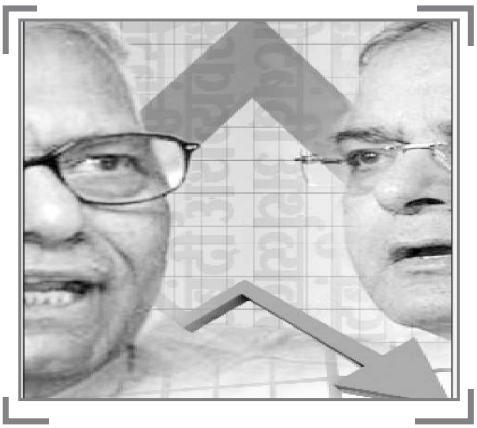

गांधी जी में अलौकिक संत-सी दूरदृष्टि और मंजे हुए राजनेता जैसी तात्कालिक परिस्थितियों के सटीक आकलन की भी क्षमता थी। पर इससे भी अधिक महत्त्व का उनका आत्मीय मानवीय संस्पर्श था। जो भी दबे, सहमे, सकुचे रूप में आता था, उनसे मिल कर खुश हो कर लौटता था। वे मनुष्य की आंतरिक सदाशयता में पूरा विास करते थे और इस भाव को सब में बांटना भी चाहते थे। इस उद्देश्य के लिए वे अपने विरोधी तक को भरोसा देना चाहते थे। यही कारण है कि लड़ने-झगड़ने के बाद भी उनके विरोधियों को भरोसा बना रहता था कि गांधी जी उनके मित्र हैं। अपनी मातृभूमि की अखंडता और एकता की चाह रखने वाले गांधी जी भिन्न और विरोधी प्रवृत्तियों को भी साथ ले चलने की शक्ति के मूर्तिमान केंद्र से बन गए थे। मनुष्य मात्र की सेवा के संकल्प और साधना के साथ गांधी जी ने स्वयं को धीरे-धीरे जनता (या कहें जनमानस) के साथ एकाकार कर दिया था। पराई पीर को जानने की कोशिश द्वारा उन्होंने जन-जन की पीड़ा, दुःख और कष्ट को अपना बना लिया था। इसी से दूरदराज के गांवों के मौन, निःस्वार्थ, स्त्री-पुरु ष, बूढ़े-बच्चे, अनपढ़-गंवार सब के अथाह विास ने उन्हें ''गान्हीं महतमा' बना दिया था। गांधी जी ने भी उनके साहस, विास और बलिदान को आदर दिया। इसी से वे और उनकी ''सुराजी पलटन' लोक-मानस में छा गई। आम आदमी से महात्मा बनने की गांधी-गाथा किसी रहस्य में नहीं लिपटी है। इसके लिए उन्होंने अपने अनुभव के सूत्र निकाल कर स्वावलंबन, सत्य-अहिंसा को व्यवहार में अमल में लाने की कोशिश शुरू की। उन्होंने लंबे समय तक खान-पान, आचार आदि पर संयम तथा आत्मानुशासन से अपने शरीर और मन को साधा था। वे खुद भी बाह्य परिस्थितियों से अप्रभावित हुए अविचलित रह पाते थे। पश्चिमी और भारतीय, दोनों ही तरह के चिंतकों से अपना वैचारिक आधार बनाकर उन्होंने अपना आध्यात्मिक मूल सुदृढ़ किया। एक शर्मीला, दुबला-पतला, अपरिपक्व-सा दिखने वाला युवा एक अपरिचित जीवन सागर में पटक दिया गया और अनुभवों से वह अपने को रचता गया। गांधी जी के निजी सचिव प्यारे लाल कहते हैं कि गांधी जी की सफलता का श्रेय उनमें समझौता करने की अचूक क्षमता में निहित है। उनमें यह शक्ति थी कि वे किसी मुद्दे को अपने विरोधी की नजर से भी देख सकते थे। इस क्षमता के साथ ही वह भरोसा करने के हिमायती थे। ये दो ऐसे आधार थे, जिसके कारण विरोधी भी गांधी जी के मित्र बन जाते थे। प्यारे लाल दक्षिण अफ्रीका का उदाहरण देते हैं कि एक दूरदराज स्थान से आए ''एमके गांधी' नाम के आदमी ने जो भिन्न नस्ल का है, पूरा अनगैया है, जिसे कोई राजकीय शक्ति या अधिकार भी नहीं प्राप्त है, सिर्फ और सिर्फ निःस्वार्थ सेवा और नैतिक दबाव की बदौलत अनजानी धरती पर विलक्षण करिश्मा दिखा दिया। यही अनुभव आगे चल कर भारत में स्वतंत्रता की लड़ाई का पूर्वरंग या कहें पूर्वाभ्यास सिद्ध हुआ। भारत में अपनी राजनैतिक यात्रा शुरू करते हुए गांधी जी ने स्वार्थहीनता, अहिंसा, दृढ़ता, साहस, नियम-बद्धता, आत्म-नियंत्रण, सत्य आदि वृहत्तर मानवीय मूल्यों को अमली जामा पहनाया।वे देश-विभाजन के लिए बिल्कुल ही तैयार नहीं थे। मुस्लिम लीग के विभाजन वाले कारनामों से दुखी थे। इसके परिणामों से आगाह और चिंतित थे पर उन्होंने सरकार के कांग्रेसी नेताओं पर निर्णय छोड़ दिया। विभाजन का निर्णय हुआ तो उन्होंने भारी मन से उसे स्वीकार किया परंतु इसके चलते समाज को जो नुकसान और कष्ट हुआ तत्काल उससे उबरने की कोशिश में जुट गए। स्वतंत्रता के जश्न से दूर विभाजन के दौरान भड़के दंगों की आग बुझाने चल पड़े थे। गांधी जी के विचार मानवता के लिए हैं, और इसीलिए अभी भी प्रासंगिक बने हुए हैं। राजनैतिक न्याय पाने के लिए उनके रास्ते पर चलने वाले कई और भी हुए हैं। मार्टनि लूथर किंग, नेल्सन मंडेला, दलाई लामा तथा सू की ने प्रकट रूप से उनका आभार माना है। गांधी जी ने स्थानीय और नियंतण्र, दोनों ही दृष्टियों से मानवीय मूल्यों पर आधृत समाज के निर्माण के लिए विकल्प प्रस्तुत किया था। दुर्भाग्य है कि गांधी जी के बाद भारतीय समाज में पारस्परिक सद्भाव कम हुआ और द्वेष को राजनैतिक हथियार बनाया जाता रहा है। गांधी-स्वर हमें अभी भी सत्य, प्रेम और अहिंसा की संभावना की याद दिलाता है।

## परत-दर-परत

# दशहरे पर रिश्तों की मर्यादा की याद

राजकिशोर

राम कथा का सब से कारु णिक पात्र कौन है? उसे जानते सभी हैं, पर उसकी चर्चा कोई नहीं करता। वास्तव में, भारतीय समाज ने उसे नफरत की दृष्टि से देखा है। हम दशहरे पर रावण की मूर्ति जला कर हर्षित होते हैं, लेकिन साल भर यह बताना भी नहीं भूलते कि घर का भेदी लंका ढाहे। राम कथा का प्रत्येक विद्यार्थी जानता है कि अगर ऐन समय पर विभीषण ने मदद नहीं की होती, तो राम के लिए रावण का वध लगभग असंभव था। लेकिन आम भारतवासी की निगाह में विभीषण ने अपने भाई से, अपने परिवार से द्रोह किया था और यह एक अक्षम्य आचरण है। राम को आदर्श पुरु ष इसलिए माना जाता है कि उन्होंने राज्याभिषेक का त्याग और चौदह वर्ष के लिए वनवास स्वीकार कर अपने पिता के वचन की रक्षा की। पिता की मृत्यु हो जाने के बाद राम चाहते तो पिता के दोनों वचनों से मुक्त हो सकते थे। वचन दशरथ ने दिए थे जिनका प्राणांत हो चुका था। अतः उनके वचन भी उन्हीं के साथ तिरोहित हो चुके थे। लेकिन यह कोई और नहीं, राम थे। उन्होंने कानून और तर्क की शरण नहीं ली, ऋषि-मुनियों की परिषद बुला कर व्यवस्था नहीं मांगी कि मृत पिता के वचन उत्तराधिकारी पुत्र के लिए बाध्यकारी हैं या नहीं। पिता की भावना समझी और राजपाट त्याग कर वन जाने के लिए प्रस्तुत हो गए। दशरथ-राम के संबंध को देखते हुए विभीषण की भूमिका पर पुनर्विचार किया जा सकता है। विभीषण को राजपाट से कोई मतलब नहीं था। वह सोने की लंका में कुटी बना कर धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहा था। लेकिन जब उसे पता चला कि रावण राम की पत्नी का अपहरण करके ले आया है, तो वह लंकेश को समझाने चला गया कि सीता को वापस कर दे। अंतिम समय तक विभीषण रावण को उसके कर्तव्य की याद दिलाता रहा पर रावण सत्ता के नशे में चूर था। हम विभीषण के अंतर्द्वद्व की के घर-घर में विभीषण की पूजा होनी चाहिए थी। लेकिन ऐसा वही समाज कर सकता था, जो कर्तव्य को सब से ऊंचा स्थान देने के लिए तैयार हो। यही बात कैकेयी और भरत के रिश्ते के बारे में कही जा सकती है। भरत ओछे होते तो तुरंत अयोध्या आकर अपना राज्याभिषेक करा सकते थे। लेकिन जब वे

> भाजपा भारतीयता की बात करती है, हिंदू आदशरे-परंपराओं की रक्षा करने की बात करती है, लेकिन क्षुद्र स्वार्थ के लिए पुत्र को पिता के बरक्स खड़ा कर देती है। पिता यशवंत सिन्हा ने अखबार में लिखा भर था कि देश की अर्थव्यवस्था बुरी हालत में है, अगले ही दिन दूसरे अखबार में पुत्र जयंत का लेख आ गया कि नहीं, अर्थव्यवस्था की हालत अच्छी है। भाजपा ने हिंदू संस्कारों की दुहाई दे कर पुत्र को ऐसा करने से क्यों नहीं रोका?

कल्पना कर सकते हैं। एक तरफ राम थे, उसके आराध्य पुरु ष, मर्यादा पुरु षोत्तम, जिनके साथ अन्याय हुआ था, दूसरी ओर रावण था, उसका अपना भाई, जिससे उसका खून का रिश्ता था, लेकिन जिसने अन्याय किया था। कहते हैं, खून पानी से गाढ़ होता है। विभीषण के सामने सवाल था ः अपने भाई की जान बचाए और अन्याय का समर्थन करे या आक्रमणकारी राम की सहायता करे और न्याय पाने में उनकी मदद करे। विभीषण ने संबंध की तुलना में कर्तव्य को चुना। उसे सिर्फ ''घर का भेदी' के रूप में याद करना उसके साथ अन्याय है। कायदे से तो राम को पूजने वाले समाज अयोध्या पहुंचे और उन्हें सारी बात पता चली तो सब से पहले वे जंगल की ओर भागे और अयोध्या वापस चलने के लिए राम से विनती करने लगे। राम नहीं माने, तो उनकी चरण पादुका ले कर भरत अयोध्या लौटे और उसे ही सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर राम की ओर से शासक का कर्तव्य निभाने लगे। ये सभी उदाहरण राजवंश के हैं यानी राजनीति के हैं। तीनों उदाहरणों में हम पाते हैं कि सत्ता और संबंध के मुकाबले कर्तव्य को उच्चतम स्थान दिया गया है। राम कथा वाले इसी भारत में किस तरह के उदाहरण सामने आ रहे हैं? अखिलेश यादव की हार में निश्चय ही एक कारण यह रहा होगा कि उन्होंने अपने पिता का असम्मान किया था, और सत्ता संघर्ष में उन्हें पराजित कर दिया था। हां, अखिलेश ने किसी बड़े लक्ष्य के लिए ऐसा किया होता, अगर जनता समझती कि पुत्र कोई बड़ा काम करना चाहता है और पिता उसकी राह में बाधा पैदा कर रहा है, तो निश्चय ही पुत्र का साथ देती। सब से आश्चय की बात है कि भारतीय जनता पार्टी भारतीयता की बात करती है, हिंदू आदशरे और परंपराओं की रक्षा करने की बात करती है, लेकिन क्षुद्र स्वार्थ के लिए पुत्र को पिता के बरक्स खड़ा कर देती है। इधर, पिता यशवंत सिन्हा ने एक अखबार में लिखा भर था कि देश की अर्थव्यवस्था बुरी हालत में है, उधर अगले ही दिन दूसरे अखबार में पुत्र जयंत सिन्हा का लेख आ गया कि नहीं, अर्थव्यवस्था की हालत अच्छी है। पिता-पुत्र दोनों भाजपा में हैं, पिता भाजपा की एक सरकार में मंत्री थे, तो पुत्र भाजपा की दूसरी सरकार में मंत्री है। पुत्र पिता की मान्यता के विरुद्ध लेख नहीं लिखता, तब भी भाजपा को कोई नुकसान नहीं होता। न पुत्र को सरकार से निकाल दिया जाता। तो फिर भाजपा ने हिंदू संस्कारों की दुहाई दे कर पुत्र को ऐसा करने से क्यों नहीं रोका? क्या भारतीय संस्कृति पितृद्रोह की संस्कृति है इसके पहले भाजपा बिहार में दो मित्रों के बीच फूट डाल चुकी थी। लालू प्रसाद और नीतीश कुमार के बीच जो भी मतभेद थे, वे दो मित्रों और सहयात्रियों के बीच के मतभेद थे। बातचीत द्वारा उन्हें सुलझाया जा सकता था। लेकिन भाजपा ने सत्ता का लालच दे कर मित्र-विग्रह करवा दिया। क्या यह भी भारतीय संस्कृति है?

# डीएम ने राहुल के अमेठी दौरे को आगे बढ़ाने का लिखा लेटर

लखनऊ.अमेठी के डीएम योगेश कुमार ने राहुल के प्रस्तावित अमेठी दौरे की डेट को आगे बढ़ाने के लिए एक लेटर कांग्रेस जिलाध्यक्ष को लिखा है। उन्होंने लेटर में मोहर्रम और दूर्गा पूजा की वजह से राहुल को पर्याप्त सुरक्षा न दे पाने की बात कही है। इस संबंध कांग्रेस प्रवक्ता अखिलेश प्रताप सिंह ने कहा- 'अमेठी राहुल का घर है और वो वहां जरूर आएंगे।' बता दें, राहुल गांधी 4 अक्टूबर से 6 अक्टूबर तक अमेठी के दौरे पर हैं। क्या है लेटर में...

डीएम ने लेटर में लिखा है- 'राहुल गांधी का 4 अक्टूबर से 6 अक्टूबर तक अमेठी का प्रस्तावित दौरा है। इसी दौरान दुर्गा पूजा और मोहर्रम का त्योहार भी कई स्थानों पर सम्पन्न होगा।' इन त्योहारों की वजह से लॉ एंड ऑर्डर बनाए रखने में जनपद का अधिकांश पुलिस बल ड्यूटी में व्यस्त रहेगा। इस वजह से राहुल गांधी के प्रस्तावित दौरे में पर्याप्य सुरक्षा-व्यवस्था देने में असुविधा होगी। इस लिए अनुरोध है कि राहुल गांधी का दौरा 5 अक्टूबर के बाद किसी दिन रखा जाए।

कांग्रेस प्रवक्त ने कहा- अमेठी राहुल का घर है, वो वहां जरूर जाएंगे

इस लेटर के संबंध में कांग्रेस नेता अखिलेश प्रताप सिंह का कहना है- "अमेठी और रायबरेली राहुल गांधी का घर है, वो वहां जरूर जाएंगे। बीजेपी इस समय बुरे हालात से गुजर रही है। इसलिए मोदी और योगी, राहुल को यूपी नहीं आने देना चाह रहे हैं।" "क्योंकि वह जानते हैं कि राहुल इमानदार हैं और वह जनता की आवाज को जरूर उठाएंगे।"

"इसलिए अमेठी जिला प्रशासन फ़ोर्स कम होने का बहाना कर रही है। बीजेपी नहीं चाहती है कि राहुल जनता की आवाज बने। लेकिन उन्हें अपने घर आना है चाहे जिला प्रशासन अनुमति दे या फिर ना दे।"

अमित शाह करेंगे अमेठी का दौरा

10 अक्टूबर से बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह यूपी के दौरे पर रहेंगे। वे उन सीटों का दौरा करेंगे। जिन सीटों पर बीजेपी को हार का सामना करना पड़ा है। इस दौरे की शुरूआत शाह अमेठी से ही करेंगे।

# सपा के राष्ट्रीय अधिवेशन में नहीं जाएंगे मुलायम!

लखनऊ.समाजवादी पार्टी का राष्ट्रीय अधिवेशन आगरा में 5 अक्टूबर को होना है। इस अधिवेशन में 25 सितंबर को प्रेस कांफ्रेंस में मुलायम सिंह ने जाने से मना किया था, लेकिन अखिलेश ने पिता का आशीर्वाद मिलने के बाद 28 सितंबर को वह मुलायम को अधिवेशन में आने का निमंत्रण दे आए। जिसके बाद चर्चा शुरू हुई कि मुलायम जायेंगे या नहीं जाएंगे। मुलायम सपा के राष्ट्रीय अधिवेशन में नहीं जाएंगे। वहीं, सीनियर पॉलिटिकल जर्नलिस्ट प्रदीप कपूर और रतन मणि लाल ने इसके कारण भी गिनाए हैं।

फिर से राष्ट्रीय अध्यक्ष बनना तय नहीं

एक्सपर्टस के अनुसार मुलायम का फिर से सपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनना तय नहीं है। अखिलेश भी जानते हैं कि अगर मुलायम को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया तो 15 महीने पुरानी कहानी फिर दोहराई जा सकती है। दरअसल, अधिवेशन में नहीं जाने से मुलायम का एक भ्रम और सम्मान बना रहेगा क्योंकि वह अगर सम्मलेन में जाते हैं और उन्हें राष्ट्रीय अध्यक्ष नहीं बनाया जाता है तो यह उनके सम्मान के लिए सही नहीं होगा, जिसके वह अब आदी हो चुके हैं।

**शिवपाल यादव से रिश्ते बने रहेंगे**

अधिवेशन में न जाने का एक कारण यह भी है कि उनके छोटे भाई शिवपाल यादव से रिश्ते बने रहेंगे।

अगर वह अधिवेशन में जाते हैं तो उन पर बेटे के पक्ष में ही खड़ा होने का आरोप लग जाएगा। ऐसे में वह शिवपाल के साथ बने रहेंगे।

परिवार को एकजुट करने का रास्ता खुला रहेगा

समाजवादी पार्टी के मुखिया रहे मुलायम देश के सबसे बड़े राजनैतिक घराने के भी मुखिया हैं। ऐसे में जो राजनीति के साथ-साथ परिवार में फूट पड़ी है। उस परिवार को एकजुट करने के प्रयास का रास्ता खुला रहेगा। गाहे-बगाहे मुलायम इसके लिए प्रयास भी करते रहे हैं। अगर वह अधिवेशन में गए तो शिवपाल को फिर परिवार से जोड़ना मुश्किल हो जाएगा।

# अंगारों पर चलकर मनाया मातम, इमाम हुसैन की शहादत में ऐसा करते हैं लोग

कानपुर. यहां मुर्हरम के मौके पर शनिवार देररात आग के मातम का आयोजन किया गया। यह शहर के ग्वालटोली क्षेत्र इमाम हुसैन को याद करते हुए हजारों लोग दहकते हुए अंगारों के ऊपर दौड़कर मातम मनाया। जिसमें बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक शामिल रहे। 'या हुसैन हम ना हुए' के नारे लगाते हुए लोगों ने अंगारों पर दौड लगा दी। अंगारों से गुजरने के लिए हुसैन के चाहने वालों में होड देखने को मिली। दौरान लाखो लोग इस मातम को देखने के लिए भी इकठ्ठा हुए।



मातम मनाने वाले अकील अहमद ने कहा, "हमारे इमाम हुसैन और उनके साथियो की शहादत में हम लोग यह मातम मनाते है। जिसके सैकड़ो की संख्या लोग शामिल होते है।" मातम में हम लोग आग के अंगारो में चल कर मातम मनाते है। यहां पर सैकड़ो साल से यह मातम मनाया जाता है। दुनिया के विभिन्न धमी के बहुत से त्योहार खुशियों का इजहार करते हैं, लेकिन हम ऐसे करते है।

## 8 दिन-फैमिली में 5 की मौत, बची 2 बेटियों ने कफन के लिए मांगा चंदा

शाहजहांपुर.यूपी के शाहजहांपुर में पिछले 8 दिनों में एक ही परिवार के 5 लोगों की मौत हो गई। इसमें पति-पत्नी, दो बेटे और एक बेटी की मौत हुई है। अब घर में सिर्फ दो बेटियां बची हैं। बीती रात ही उनके पिता की मौत हो गई, जिसके कफन के लिए दोनों बेटियों को को गांव में चंदा इकट्ठा करना पड़ा। ये मामला शाहजहांपुर के धयेंरा गांव का है।

# धार्मिक होर्डिंग फाड़े जाने के बाद 2 पक्ष आमने-सामने, पुलिस ने किया लाठीचार्ज

कानपुर.यूपी के कानपुर में रविवार को कल्याणपुर थाना क्षेत्र में धार्मिक होर्डिंग फाडे जाने के बाद 2 पक्ष आमने सामने आ गए। जिसके बाद दोनों पक्षों में जमकर पथराव हुआ। क्षेत्रीय लोगों की सूचना पर डीएम, डीआईजी समेत कई थानों का भारी पुलिस फ़ोर्स पहुंच गई। जहां रामलला मंदिर के अंदर घुसकर पुलिस ने जमकर लाठियां भी भांजी। वहीं दूसरी ओर शहर के जूही थाना क्षेत्र के परमपुरवा में ताजिया के रूट को लेकर 2 पक्ष आमने सामने आ गए। गुस्साए लोगों ने एक दूसरे पर पथराव किया और दर्जनों गाड़ियों में आग लगा दी।

शनिवार को देर रात रावतपुर गांव में हुई दो पक्षों में झड़प के बाद से तनाव चल रहा था। जहां रविवार को दोनों पक्ष फिर आमने सामने आ गए। जिसके बाद जमकर पथराव किया गया। आपको बता दे कि शनिवार को दशहरा के अवसर पर रामलला की झांकी निकल रही थी।

वहीं गली में लगे हुए ताजिए की झंडिया किसी तरह से टूट कर उखड़ गई। जिसके बाद मुस्लिम पक्ष के लोगों ने साउंड सिस्टम पटक दिए। जहां दोनों पक्षों में तू-तू मैं-मैं शुरू हो गई। तनाव बढ़ता देख मौके पर पहुंची पुलिस ने माहौल को शांत करवाया।

वहीं रविवार को फिर उसी मामले में तनाव के चलते दोनों पक्ष फिर आमने सामने आ गए। बताया जा रहा है कि अराजक तत्वों द्वारा धार्मिक पोस्टर फाड़ने की बात सामने आ रही है। जिसके बाद आज हिन्दू पक्ष के लोगों ने रोड ब्लॉक कर दिया।

वहीं रविवार को मुहर्रम के दिन ताजिया निकल रहा था। रोड ब्लॉक की जानकारी से नाराज दूसरे पक्ष के लोगों ने जमकर पथराव कर दिया। जिसके बाद दोनों तरफ से जबरदस्त पथराव किया गया। जिनमे आधा दर्जन लोग घायल हो गए।

हिन्दू मुस्लिम विवाद की सूचना पर डीएम डीआईजी समेत कई थानों का फ़ोर्स पहुंच गई। जहां पथराव कर रहे लोगों को समझाया गया लेकिन उनके नहीं मानने पर रामलला मनदिर में जमकर पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। इस लाठीचार्ज में आधा दर्जन लोग घायल हो गए है। वहीं कुछ लोगों को पुलिस ने पकड़ भी लिया है।

पुलिस ने क्या कहा

डीआईजी सोनिया सिंह ने कहा, "यहां पर 2 पक्ष आमने सामने आ गए थे। पुलिस समय पर पहुंची गई है और दोनों पक्षों को शांत करा दिया गया है। माहौल को शांत करने के लिए लाठी पटकर उपद्रवियों को फटकारा गया। सुरक्षा के मद्देनजर भारी पुलिस बल तैनात कर दिया गया है।"

**यहां रूट को लेकर हुआ बवाल**

जूही थाना क्षेत्र के परमपुरवा के अंतर्गत बिना रूट के ताजिया निकलने को लेकर 2 पक्ष हुए आमने सामने आ गए। इस दौरान जमकर दोनों तरफ से पत्थरबाजी भी हुई। जिससे कई

## बिहार

# बाल विवाह और दहेज प्रथा के खिलाफ अभियान आज से

पटना. 18 वर्ष से कम की लड़की और 21 वर्ष से कम उम्र के लड़के की शादी नहीं करेंगे। हम ऐसे किसी आयोजन में शामिल नहीं होंगे, जहां बाल विवाह किया जा रहा हो या दहेज का लेन-देन हुआ हो। कम उम्र की शादी और दहेज का लेन-देन एक सामाजिक बुराई और कानूनी अपराध है। इसके लिए हम हर संभव प्रयास करेंगे। हम बिहार के विकास के सहभागी हैं और अपने राज्य को बाल विवाह और दहेज मुक्त बनाने की प्रतिज्ञा करते हैं।गांव के स्कूल और आंगनबाड़ी केंद्रों से लेकर टोले-मोहल्ले सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में गांधी जयंती के मौके पर सोमवार को राज्य भर के लोग बाल विवाह और दहेज प्रथा के खिलाफ यह शपथ दोहराएंगे।

शराबबंदी के बाद राज्य में यह बड़ा अभियान शुरू हो रहा है। राज्य स्तरीय कार्यक्रम गांधी मैदान के पास 5 हजार क्षमता वाले नवनिर्मित सम्राट अशोक कन्वेंशन सेंटर में होगा। यहां मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अभियान की शुरूआत कर लोगों को बाल विवाह रोकने और दहेज न लेने का संकल्प दिलाएंगे। सामाजिक कार्यकर्ता, विकास मित्र, साक्षरता कार्यकर्ता, जीविका दीदी, महिला विकास निगम के जुड़े लोगों के साथ ही राज्य भर के कला जल्था के कलाकारों को कन्वेंशन हॉल में बुलाया गया है। 124 कला जत्था के 1564 कलाकार, मुख्य समन्वयक और एसआरजी आदि शामिल होंगे। कलाकारों को ठहरने के लिए बांकीपुर कन्या विद्यालय, मिलर स्कूल में व्यवस्था की गई है। जन शिक्षा के सहायक निदेशक मो. गालिब के अनुसार दहेजबंदी और बाल विवाह उन्मूलन अभियान के लिए 9 गीतों की रचना की गई है। सीएम अभियान गीतों की सीडी जारी करेंगे। रंगकर्मी संजुला कुमारी लिखित दहेज करो परहेज और उदय कुमार लिखित बिटिया बहादुर का मंचन किया जाएगा। विधानसभा अध्यक्ष विजय कुमार चौधरी, उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी, शिक्षा मंत्री कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा, ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार, पंचायती राज मंत्री कपिलदेव प्रसाद कामत, स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय, नगर विकास मंत्री सुरेश शर्मा।

## उत्तर बिहार में बाढ़ के बाद भी सूबे में 75 लाख टन धान उत्पादन का अनुमान

पटना. उत्तर बिहार के 19 जिलों में बाढ से खेती बर्बाद होने के बाद भी इस वर्ष 75 लाख टन धान उत्पादन की उम्मीद है। राज्य में फसल उत्पादन से संबंधित प्रथम आकलन रिपोर्ट में पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 10 लाख टन कम उपज का अनुमान लगाया गया है। उत्तर बिहार के बाढ से फसल नुकसान की भरपाई दक्षिण और मध्य बिहार से होती दिख रही है। हालांकि इस माह के मध्य में एक बारिश और हो गई तो धान की बंपर उपज मिल जाएगी। बाढ के बाद खेतों से पानी निकल जाने के बाद उत्तर बिहार में भी उत्पादन हो जाएगा। इस वर्ष पिछले वर्ष की तुलना में एक लाख हेक्टेयर में अधिक धान की रोपनी हुई है।

# आरोपी को पीट-पीटकर मार डाला, राजद नेता के हत्या का भी था आरोपी

सीवान.बिहार के सीवान जिले में राजद नेता मिन्हाज की हत्या के आरोपी राजा खान को भीड़ ने सोमवार को पीट-पीटकर मार डाला। हत्या के बाद से सीवान में तनाव का माहौल है। भारी संख्या में पुलिस बल को तैनात किया गया है। पुलिस और राजा के बीच मुठभेड़ के दौरान राजा की गोली से एक ग्रामीण घायल हो गया था। जिसके बाद भीड़ ने घटना को अंजाम दिया। राजा की पहले पुलिस से हुई थी मुठभेड़...

घटना के बारे में बताया जा रहा है कि शनिवार की रात राजा को पकड़ने के लिए पुलिस ने छापेमारी की थी। राजा अपने साथियों के साथ मौजूद था। पुलिस की सूचना मिलते ही राजा साथियों के साथ भागते हुए पुलिस पर फायरिंग करने लगा। पुलिस के डर से राजा एक घर में छुप गया और वही से पुलिस पर फायरिंग करने लगा। इस दौरान एक ग्रामीण राजा की गोली से घायल हो गया। जिसके बाद ग्रामीण एकजुट हो गए और राजा पर हमला करने का फैसला किया। इस दौरान ग्रामीणों ने राजा को पकड़ लिया और ईंट पत्थर से मार डाला।

बताया जा रहा है कि राजा के हथियार से ही ग्रामीणों ने उसको गोली भी मार दी। पुलिस कराना चाहती थी सरेंडर

सीवान एसपी सौरव साह ने कहा कि राजा की गिरफ्तारी के दौरान पुलिस सतर्कता बरत रही थी। हमलोगों का प्रयास था कि उसको सरेंडर कराया जाए।

इस दौरान राजा की एक गोली पब्लिक को लग गई। जिसके बाद पब्लिक बेकाबू हो गई। इसके बाद पब्लिक ने राजा पर हमला कर मारा डाला। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

## जन अधिकार पार्टी के जिला अध्यक्ष की दबंगई, सांस्कृतिक कार्यक्रम में दौड़ाया स्कॉर्पियो

गया.बिहार के गया जिले के इमामगंज में शनिवार की रात जन अधिकार पार्टी के युवा अध्यक्ष भवानी सिंह ने सांस्कृति कार्यक्रम के दौरान स्कॉर्पियो दौड़ा दिया। इस दौरान अफरातफरी का माहौल हो गया। कार्यक्रम के दौरान लोगों ने भागकर अपनी जान बचाई। शराब के थे नशे में...

घटना के बारे में बताया जा रहा है कि दशमी के अवसर पर जागरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम के शुरू होने के तीन चार घंटे के बाद भवानी पहुंचे।

लोगों ने कहा कि भवानी शराब के नशे में धुत थे। वह स्कॉर्पियो लेकर सीधे कार्यक्रम में दौड़ा दिए। इस दौरान कई कुर्सियां टूट गई और अफरातफरी मच गई। लोग लोग इधर-उधर भागने लगे।

भवानी के दबंगई के कारण कार्यक्रम आयोजन करने वाले और स्थानीय लोगों ने डर के कारण पुलिस से शिकायत भी दर्ज नहीं कराई है।

घटना के दौरान भवानी खुद गाड़ी चला रहे थे। किसी तरह ग्रामीणों ने छुपकर घटना का वीडियो बनाया है।

वहीं, पुलिस का कहना है कि अभी तक कोई शिकायत नहीं मिली है। शिकायत मिलने के बाद कार्रवाई होगी।

# आर्केस्ट्रा के दौरान चली गोली, देखने गए युवक की हुई मौत

मधेपुरा. बिहार के मधेपुरा में शनिवार की रात आर्केस्ट्रा में आगे की सीट पर बैठने को लेकर दो गुटों विवाद हो गया। इस दौरान युवकों ने जमकर गोलीबारी की। एक गोली स्थानीय युवक की गर्दन के पिछले हिस्से में लग गई। गोली लगने के बाद मौके पर ही उसकी मौत हो गयी। मृतक की पहचान दाहो मंडल के पुत्र चंदन कुमार के रूप में कई गयी। घटना जिले के रतवारा ओपी क्षेत्र के कपासिया गांव की है।

**दुर्गा पूजा के अवसर पर हो रहा था**

घटना के बारे में बताया जा रहा है कि दुर्गा पूजा के अवसर पर शनिवार को ग्रामीण आर्केस्ट्रा का कार्यक्रम करा रहे थे।

आधी रात को खगड़िया जिले के बसवा गांव के अपराधी किस्म के लगभग एक दर्जन युवक हथियार लेकर आर्केस्ट्रा देखने पहुंच गए और आगे की कुर्सी पर बैठे लोगों को हटाने लगे।

पहले से कुर्सी पर बैठे स्थानीय लड़कों से विवाद हो गया। इसके बाद बसवा गांव से आए सभी लड़के पास के स्कूल के पीछे जाकर फायरिंग करने लगे।

ग्रामीण जबतक कुछ समझ पाते एक गोली सीधे चंदन की गर्दन में जा लगी। इससे मौके पर ही उसकी मौत हो गयी।

**बिना अनुमति के हो रहा था आर्केस्ट्रा**

आलमनगर के बीडीओ मिन्हाज अहमद ने बताया कि आर्केस्ट्रा कार्यक्रम के आयोजक ने किसी अनुमति नहीं ली थी।

इस कारण से प्रशासन को घटना की सूचना उन्हें बाद में मिली।

## समाज कल्याण मंत्री के काफिले पर हमला, दो सुरक्षाकर्मी घायल

समस्तीपुर. बिहार के समस्तीपुर जिले के दलसिंहसराय के पकड़ा पुल के पास रविवार को समाज कल्याण विभाग की मंत्री मंजू वर्मा के काफिले पर सड़क हादसे से नाराज लोगों ने पथराव कर दिया। पथराव में दो सुरक्षाकर्मी घायल हो गए हैं।

**लोगों ने किया था सड़क जाम**

घटना के बारे में बताया जा रहा है कि मंजू वर्मा बेगूसराय से लौट रही थी।

इसी दौरान समस्तीपुर के दलसिंहसराय के पास सड़क हादसे से नाराज लोग सड़क जाम कर प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी कर रहे थे।

जाम के दौरान ही मंत्री का काफिला पहुंच गया। सड़क जाम होने के कारण सुरक्षाकर्मी जाम हटाने की कोशिश करने लगे।

सूरत। ड्रीम इंडिया स्कुल सचिन में नवरात्रि के अंतिम दिन में स्कुल प्रशासन ने गरबा का आयोजन किया गया. जिसमें स्कुल के प्रधानाचार्य श्री मती पुनम उपाध्याय जी ने परंपरागत ढंग से दीप जलाकर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत किया,जिस समय स्कुल के और सचीन विस्तार के अन्य गण-मान्य व्यकित उपस्थित रह कर कार्यक्रम की शोभा बडाई.

## मध्य गुजरात में राहुल गांधी की तीन दिवसीय यात्रा 9 अक्टूबर से

अहमदाबाद। 25 सितंबर को सौराष्ट्र की तीन दिवसीय यात्रा के बाद कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी आगामी 9 अक्टूबर से मध्य गुजरात की यात्रा करेंगे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भरतसिंह सोलंकी ने राहुल गांधी के मध्य गुजरात के दौरे की जानकारी देते हुए बताया कि 9 अक्टूबर को राहुल गांधी अहमदाबाद आएंगे। तीन दिवसीय यात्रा के पहले दिन मेहमदाबाद, नडियाद, खेडा, आणंद होकर वडोदरा पहुंचेंगे।

# राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद आज पोरबंदर में, सोमनाथ के दर्शन भी करेंगे

अहमदाबाद (ईएमएस)। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद गांधी जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर को गुजरात आ रहे हैं। गांधीजी की जन्मस्थली पोरबंदर के कीर्ति मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में रामनाथ कोविंद शामिल होंगे। पोरबंदर में स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) के तहत ग्रामीण गुजरात निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, जिसमें राष्ट्रपति शिरकत करेंगे। इस मौक पर गुजरात के राज्यपाल ओपी कोहली और मुख्यमंत्री विजय रूपाणी भी मौजूद रहेंगे। पोरबंदर आ रहे राष्ट्रपति मांगरोल में जीएमबी के एक बंदरगाह प्रोजेक्ट की आधारशिला रखने वाले हैं। राष्ट्रपति के कार्यक्रम के देखते हुए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। कार्यक्रम पूरा होने के बाद राष्ट्रपति सोमनाथ भगवान के दर्शन करने सोमनाथ जाएंगे और वहां से दिल्ली के लिए रवाना हो जाएंगे। जानकारी के मुताबिक 2 अक्टूबर को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद दिल्ली स्थित विजय घाट जाएंगे, जहां गांधीजी को श्रद्धासुमन समर्पित करने के बाद दिल्ली हवाई अड्डे पहुंचेंगे। 9.15 बजे दिल्ली से रवाना होंगे और 11 बजे राजकोट पहुंचेंगे। राजकोट से 11.10 बजे पोरबंदर के लिए रवाना होंगे। 12.05 बजे पोरबंदर पहुंचेंगे, जहां से 12.25 बजे कीर्ति मंदिर जाएंगे। 12.45 कीर्ति मंदिर से सर्किट हाउस जाएंगे और दोपहर का भोजन कर 2.05 बजे मांगरोल के लिए रवाना होंगे। मांगरोल में कार्यक्रम पूरा होने के बाद रामनाथ कोविंद 3.50 बजे सोमनाथ के लिए रवाना होंगे। सोमनाथ में भगवान सोमनाथ के दर्शन करने के बाद राष्ट्रपति दिल्ली रवाना हो जाएंगे।

## ठाकोर समाज की मांग पूर्ण करनेवाले को समर्थन : अल्पेश ठाकोर

वडोदरा। गुजरात विधानसभा चुनाव के आडे चंद महीने शेष रह गए हैं और आंदोलनों से घिरी राज्य की भाजपा सरकार एक ओर नाराज पाटीदारों को मनाने का प्रयास कर रही है, दूसरी और ओबीसी नेता अल्पेश ठाकोर ने युवकों को रोजगार, राम मंदिर, राम यूनिवर्सिटी की मंजूरी समेत किसानों के कर्ज माफ करने का अल्टीमेटम दिया है। ओबीसी एकता मंच के नेता अल्पेश ठाकोर ने आगामी चुनाव में उसी राजनीतिक दल को समर्थन देने का ऐलान किया जो ठाकोर समाज की मांग पूरी करेगा। वडोदरा में अल्पेश ठाकोर ने भाजपा और कांग्रेस दोनों को ठाकोर समाज की मांग स्वीकारने का अल्टीमेटम देते हुए कहा कि जो इसे पूरी करेगा ठाकोर समाज चुनाव में उसके साथ होगा। अल्पेश ठाकोर ने राज्य की भाजपा सरकार को 5 अक्टूबर तक अल्टीमेटम दिया है। साथ ही अल्पेश ठाकोर ने उम्मीद जताई है कि राज्य में नई सरकार आम जनता और किसानों की होगी।

# समुद्र के 130 फीट नीचे मिली 10 हजार पुरानी भगवान कृष्ण की द्वारका

ओलपाड (सूरत).गुजरात के डभारी गांव के पास अरब सागर में 130 फीट की गहराई में 10 हजार साल पुराने अवशेष मिले हैं। यह क्षेत्र सूरत के नजदीक ओलपाड तहसील में आता है। एक्सपर्ट स इसे भगवान श्रीकृष्ण की बसाई द्वारका नगरी का हिस्सा मान रहे हैं। अरब सागर में पॉल्यूशन लेवल की जांच में जुटी टीम को ये कामयाबी मिली है।समुद्र के गर्भ से मिला था पर्वत...

सरकार यहां मॉडर्न टेक्नोलॉजी से द्वारका के अवशेषों का पता लगाने की कोशिश में जुटी है। 2000 से 2011 तक नेशनल इंस्टिट्यूट ओशन टेक्नोलॉजी की ओर से समुद्र में पॉल्यूशन की जांच के दौरान से अवशेषों का मिलना शुरू हुआ था।

1988 में इसी समुद्री इलाके में आर्कियोलॉजी एंड ओशन टेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट को समुद्र के गर्भ एक पर्वत मिला था। माना जा रहा है कि ये पर्वत समुद्र मंथन के वक्त इस्तेमाल हुए शिखर का हिस्सा है।

क्या है पौराणिक मान्यता।

पौराणिक ग्रंथों के मुताबिक, श्रीकृष्ण ने मथुरा में मामा कंस का वध किया था। इसके बाद कंस के ससुर और मगध के राजा जरासंध ने कृष्ण सहित यादवों का नामोनिशान मिटाने का तय किया था।

कृष्ण ने मथुरा छोड़कर अरब सागर किनारे द्वारका स्थापित की, जो समुद्र का जलस्तर बढ़ने से डूब गई।

रिसर्च में मिली चीजें बताती हैं, समृद्ध थी यहां की सभ्यता

समुद्र के इस हिस्से से पत्थर के हथियार, मिट्टी के बर्तन, नहर में लगाए गए संसाधन, स्नानागार, मूल्यवान पत्थर, कंगन, बैल के सींग के साथ मानव की हड्डियां मिलने से यहां मानव बस्ती होने की बात को समर्थन मिलता है।

यहां से मिली लकड़ी की चीजों की कार्बन डेटिंग से पता चला कि ये 9500 साल पुरानी हैं। इसके साथ यहां से हड़प्पा सभ्यता के मौजूद तालाब, स्नानागार जैसी चीजों के निशान भी मिले हैं।

खंभात से कच्छ तक फैली हुई थी द्वारका : एक्सपर्ट

डॉ. एस कथरोली की अगुआई में बनी रिसर्च टीम में शामिल रहे और डभारी में 800 फीट गहराई तक पहुंचने वाले आर्कियोलॉजिस्ट मितुल त्रिवेदी के मुताबिक, द्वारका एक राज्य था। तब खंभात और कच्छ का अखात क्षेत्र नहीं था। संपूर्ण जमीन थी। हाल ही में द्वारका से सूरत तक समुद्र किनारे पर एक दीवार भी देखने को मिली है।

डॉ. एस. कथरोली की अगुआई में हुई रिसर्च में नर्मदा नदी के मुख्य स्थल से 40 किमी दूर और तापी नदी के मुख्य स्थल के पास अरब सागर के उत्तर-पश्चिम में प्राचीन नगर के अवशेष मिले थे।

# सरदार पटेल के घर में शाह की रैली; मंच पर पहुंचते ही पाटीदारों ने फेंकी कुर्सियां

अहमदाबाद.गुजरात में विधानसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा भले ही न हुई हो, पर भाजपा और कांग्रेस दोनों ने राज्य में चुनावी बिगुल फूंक दिया है। दोनों की चुनावी यात्रा पटेल बहुल इलाकों से शुरू हुई है। कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने इसी हफ्ते 'नवसर्जन गुजरात यात्रा' निकाली थी।

शनिवार को भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मस्थान करमसद से 'गुजरात गौरव यात्रा' को रवाना किया। इसके बाद एक जनसभा को संबाधित किया। जैसे ही अमित शाह मंच पर पहुंचे पाटीदार युवा उनके खिलाफ नारेबाजी करने लगे। उन्होंने कुर्सियां भी फेंकी। शाह का पहले भी गुजरात में विरोध हो चुका है। शाह ने कांग्रेस पर सरदार वल्लभ भाई पटेल को भारत रत्न देर से दिए जाने पर सवाल खड़े किए। 'गुजरात गौरव यात्रा' 1 से 15 अक्टूबर तक चलेगी। 138 जनसभाएं होंगी। यात्रा के दो रूट हैं। इसकी जिम्मेदारी गुजरात के उपमुख्यमंत्री नितिन पटेल व गुजरात प्रदेश अध्यक्ष जीतूभाई वघानी को दी गई है।

22 साल से अभेद्य गढ़ बचाने के लिए झोंकी ताकत

गुजरात में बीजेपी 1995 से सत्ता में है। पार्टी ने अपने अभेद्य किले को बचाने के लिए पूरी ताकत लगा दी है। शुरुआत यूपी चुनाव के खत्म होने के साथ ही शुरू हो गई थी। प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह यूपी चुनाव के अगले ही दिन गुजरात के लिए रवाना हो गए थे। वह वहां दो दिनों तक रहे और सोमनाथ मंदिर भी गए थे।

इसलिए पटेल हैं अहम

दो दशक से पाटीदार वोट की वजह से भाजपा गुजरात को फतह करती रही है पाटीदारों के लिए कांग्रेस और भाजपा ने पूरी ताकत लगा दी है। इस चुनाव में वो राजनीति का केंद्र बन गए हैं। राज्य में करीब 20% पाटीदार हैं। जातिवार देखें तो भाजपा व कांग्रेस दोनों के पास, पाटीदारों को छोड़कर, 42-42 फीसदी वोट हैं। माना जाता है कि पाटीदारों ने दो दशक से भाजपा को जिताने में अहम भूमिका निभाई है। 80 फीसदी पाटीदारों के वोट 2012 विस चुनाव में भाजपा को मिले थे

पटेलों में दो उप-समुदाय लेउवा और कड़वा हैं। हार्दिक, कड़वा पटेल हैं। केशुभाई पटेल लेउवा समुदाय से हैं। 1990 के दशक से ही करीब 80% पटेल, भाजपा के पक्ष में वोट करते आए हैं। पाटीदार समुदाय में लेउवा 60% और कड़वा 40% हैं। 2012 में भाजपा को करीब 63% लेउवा और 82% कड़वा के वोट मिले थे। पिछले तीन चुनावों में हार-जीत में 10% वोटों का अंतर

कांग्रेस को 1985 के चुनाव में 55.6% वोट मिले थे। 2012 में यह 38.9% तक पहुंच गया। इस दौरान बीजेपी का ग्राफ 15% से 48% तक पहुंच गया। पिछले 3 चुनावों में भाजपा को 48-50% वोट मिले। हर बार भाजपा-कांग्रेस के बीच 10% वोटों का अंतर रहा है।

राहुल को जवाब: शाह ने चुना सरदार पटेल का घर

राहुल के सौराष्ट्र पहुंचने पर पाटीदार आंदोलन के नेता हार्दिक पटेल ने उनका स्वागत किया था। ऐसे में पटेलों के कांग्रेस की ओर झुकाव को रोकने के लिए भाजपा ने सरदार पटेल के घर से ही यात्रा को हरी झंडी दिखाई। 2012 में भाजपा को 48% वोट मिले थे, जिनमें 11% पाटीदारों का था। इसलिए इस बार भाजपा की सबसे बड़ी चिंता पाटीदार हैं।

## ट्रक की चपेट में आने से बाइक सवार दंपत्ति समेत पुत्री की मौत

साबरकांठा (ईएमएस) । जिले के हिम्मतनगर-अहमदाबाद नेशनल हाईवे पर टुडोर के निकट ट्रक की चपेट में आने से बाईक सवार दंपत्ति समेत उसकी पुत्री की मौत हो गई। स्थानीय पुलिस ने ट्रक चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की है। सूत्रों के मुताबिक गांधीनगर जिले के वावोल गांव निवासी राकेश मोहनभाई प्रजापति अपनी मोटर साइकिल पर पत्नी और पुत्री के साथ साबरकांठा जिले के प्रांतिज निवासी अपने साढू के घर जा रहे थे। उस दौरान हिम्मतनगर-अहमदाबाद हाईवे पर प्रांतिज के टुडोर के निकट पीछे से आए ट्रक ने बाइक सवार दंपत्ति को अपनी चपेट में ले लिया। ट्रक की टक्कर बाईक सवार दंपत्ति समेत पुत्री सड़क जा गिरे और ट्रक ने तीनों को रौंद दिया। इस हादसे में राकेश समेत उनकी पत्नी आशा और पुत्री निशिता की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद सड़क जाम लग गया। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंच गई और यातायात बहाल किया और शवों को पोस्टमार्टम के लिए प्रांतिज के स्वास्थ्य केन्द्र में भेज दिया।

# 77 की उम्र में इस महिला ने किया ये कारनामा, चीन में जीते दो सिल्वर मेडल

जूनागढ़ (गुजरात). यहां के 77 साल की मास्टर एथलीट भानुमति बेन ने सितंबर में चीन में हुई 20वीं एशियन मास्टर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में दो सिल्वर अपने नाम कर लौटी हैं। वे साल 2014 से कॉम्पिटीशन में हिस्सा ले रही हैं। उन्होंने अब तक 32 मैडल जीते हैं। विश्व वृद्ध दिवस के मौके पर जूनागढ़ शहर के सीनियर सिटीजन बोर्ड ने रविवार को भानुमति बेन को सम्मानित किया। वे तीन साल में 32 मेडल जीत चुकी हैं। भानुमति को ऐसे मिली इंस्पीरेशन...

चीन में आयोजित एथलेटिक्स में हिस्सा लेने के लिए सीनियर सिटीजन बोर्ड ने 20 हजार और मनपा ने 80 हजार की आर्थिक सहायता दी।

सरकार से अपेक्षा के सवाल पर भानुमति का कहना है कि मैं मास्टर एथलेटिक्स में देशभर में खेलने गई हूं। सरकार कोई हेल्प नहीं करती। अन्य खिलाड़ियों की तरह हेल्प करनी चाहिए। खिलाड़ियों को पेंशन मिलना चाहिए।

एक पैर पर खड़े होकर दर्शन करने से मिली प्रेरणा

इंस्पीरेशन के सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि वे आस्था स्थल हवेली जाती थी तब एक पैर पर खड़े होकर दर्शन करती थी।

वहीं एक सज्जन मिले उन्होंने एथलेटिक कॉम्पिटीशन में हिस्सा लेने का फॉर्म दिया। ये बात 2014 की है। उन्होंने ही फॉर्म भरा। बस 2014 से मैं मैदान में हूं।

कब तक खेलती रहेंगी के जवाब में भानुमति बेन कहती हैं कि शरीर के साथ देने तक। लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए भी मैं ऐसा करने की इच्छुक हूं।

चलते रहना बड़े काम का

मैसेज देते हुए उन्होंने कहा कि जिनकी उम्र ज्यादा हो गई है उन्हें लगातार चलते रहना चाहिए। ऐसा करने से तंदुरुस्ती अच्छी रहती है।

उन्होंने कहा कि लंबी उम्र वाले लोगों को खुद का ध्यान रखना चाहिए और जहां तक हो सके खुद की देखभाल के लिए आत्मनिर्भर रहना चाहिए।

35 साल से दूध नहीं लिया

हेल्थ के सवाल पर भानुमति बेन ने कहा कि मुझे हॉस्पिटल जाने की जरूरत नहीं पड़ती। हेल्थ अच्छा रहे इसलिए 35 साल से दूध को डाइट में नहीं शामिल किया। उन्होंने बताया कि 45 साल से नवरात्र के व्रत रखती हूं। व्रत में सिर्फ नीबू-पानी आहार होता है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा 4 ओ-ब्लाक आगम नवकार कॉम्प्लेक्ष सचीन रेल्वे स्टेश के पास,सूरत, जि. सूरत, गुजरात से प्रकाशित, एवं तासीलोक पब्लिकेशन 152,153 श्री राम इंडस्ट्रीयल एरिया पांडेसरा सूरत 394210 से मुद्रत, फोन नं. 9879141480 संपादक सुरेश मौर्या ( पी आर बी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी ) E-mail: krantisamay@gmail.com